बेस्ट प्रैक्टिस शीर्षक : **PEN BIN:** सतत विकास की ओर एक छोटा कदम

''प्रकृति को हमारी जरूरत नहीं है, हमें प्रकृति की जरूरत है''

“Recycle - Reduce - Reuse – Rethink”

''प्लास्टिक पेन : मेरा मित्र लेकिन पर्यावरण का दुश्मन''

आज हम सतत विकास और जी 20 लक्ष्यों के बारे में बात कर रहे है। इन लक्ष्यों को सरल और छोटे कदम उठाकर हासिल किया जा सकता है। जब हम भारत में प्लास्टिक प्रदूषण के बारे में बात करते हैं, तो हम सिर्फ प्लास्टिक की थैलियों एवं बोतलों के बारे में सोचते है। हम उन चिजों के बारे में सोचते रहते है, लेकिन हम इन असली राक्षसों – बॉल पॉइंट पेन/प्लास्टिक पेन को नजरअन्दाज कर देते है। इन्हें रिसाइकल नहीं किया जा सकता क्योंकि इन पेन से धातु की निब और स्याही को अलग करना मुस्किल है। नतीजतन, ये पेन हमारें जल स्त्रोतों और लैंडफिल में जाकर हमारे पानी और मिट्टी को प्रदूषित करते है। हमारे पास उचित प्लास्टिक पेन है जो सस्ते है लेकिन सभी दोबारा भरने योग्य नहीं है। हम इस प्रकार के पेन का उपयोग करना पसंद करते है क्योंकि आज के समय में हमारे पेन के लिए उपयुक्त रिफिल प्राप्त करना भी एक कार्य है। सर्वेक्षणों से यह साबित हुआ है कि अधिकतर लोग प्लास्टिक पेन अक्सर खरीदते है क्योंकि उनकी कीमत कम होती है। अगर हम हर दिन, महिने, या साल में लोगों द्वारा स्तेमाल और फेके जाने वाले पेन की संख्या गिने और गुणा करें तो बरबाद प्लास्टिक मात्रा का चौकाने वाला परिदृश्य सामने आता है। सतत विकास के लक्ष्यों के अनुसार हम लोगों को प्लास्टिक के कम या बिल्कुल उपयोग न करने के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। कही न कही हम इस सबसे छोटी चीज को भुलते जा रहे हैं जिसका इस्तेमाल हर इन्सान करता है यानी सिंगल यूज़ प्लास्टिक पेन।

रिपोर्ट के अनुसार हर साल वैश्विक स्तर पर 2 बिलियन से अधिक प्लास्टिक पेन बेचे जाते हैं, जो 1000 टन प्लास्टिक कचरे के बराबर होता है। है। यह कचरा लैंडफिल, महासागरों और यहां तक कि हमारे

भोजन में भी पहुंच जाता है। पेन **पॉलीस्टाइरीन या पॉलीप्रोपाइलीन** से बना होता है।

- महाविद्यालय स्तर पे हमने एक अभियान शुरू किया है, जहां अलग–अलग कक्षाओं पर विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया **पेन–बिन** रखे गये। जब विद्यार्थी अपने उपयोग किए गए पेन उनमें फेकते हैं, तो वे नियमित रूप से फेंके जाने वाले पेन की अकल्पनीय संख्या को देख पाएगे। यह उनके दिमाग को वास्तव में सतत विकास के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करेगा।
- पेन पुनर्चकित करके, महाविद्यालय के सभी कर्मचारी और छात्रा हमारे शून्य अपशिष्ट लक्ष्य की दिशा में काम करते हुए लैंडफिल में जाने वाले प्लास्टिक कचरे की मात्रा को कम करने में मदद कर रहे हैं।
- यह छोटा सा कदम हमें पर्यावरण के लिए सबसे हानिकारक घटकों में से एक प्लास्टिक को शामिल करने की दिशा में सतत विकास के मुख्य लक्ष्य (SDG–12) की ओर ले जाएगा।

लक्ष्य (Mission) : इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक पेनों को रिसायकल करने के मिशन पर। वर्तमान समाज की **''फेंकने''** की संस्कृति ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि अब पेन या पेंसिल से कोई भावात्मक जुड़ाव नहीं रह गया है। पहले कलम हमारी पीढ़ी के लिए सिखने का प्रतीक था, अब कलम प्लास्टिक कचरे का एक वस्तु मात्र है। वर्तमान पीढ़ी को हमारे ग्रह पर प्लास्टिक प्रदूषण के दूषप्रभावों के बारे में अवगत कराया जाना चाहिए। हमारा प्रत्येक कार्य हमारा भविष्य निर्धारन करता है। यदि इस साधारण विचार का प्रभाव केवल एक ही स्थान पर इतना अधिक है, तो कल्पना कीजिए कि यदि भारत/छत्तीसगढ़ में हम में से प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक प्लास्टिक पेन का त्याग कर दे तो कितना बढ़ा परिणाम प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार लोगों को पुनः उपयोग योग्य पेन या स्याही वाले पेन का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना है।

उद्देश्य :–

- महाविद्यालय में अलग–अलग कक्षाओं पर विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया पेन बिन रखे जाये।

- उपयोग किए गए पेन पेन बिन में डाले जाते है, तो विद्यार्थी नियमित रूप से फेकें जाने वाले पेन की अकल्पनीय संख्या को देख पायेंगे। यह उनके दिमाग को वास्तव में सतत विकास के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करेगा।
- पेन पुनचक्रित करके, महाविद्यालय के सभी कर्मचारी और विद्यार्थी शुन्य अपशिष्ट लक्ष्य की दिशा में काम करते हुए लैंडफिल में जाने वाले प्लास्टिक कचरे के मात्रा को कम करने में मदद करना है।
- Use & Throw पेन का उपयोग कम से कम करने की दिशा में जागरूकता अभियान चलाना।
- पर्यावरण के सबसे हानिकारक घटकों में से एक यानि प्लास्टिक को सामिल करने की दिशा में सतत विकास के मुख्य लक्ष्य (SDG - 12) की ओर ले जाना।

अभ्यास :–

- पेन–बिन बनाने के लिए महाविद्यालय में एक **पर्यावरण अनुकूल उत्पाद कार्यशाला** का आयोजन ईको क्लब द्वारा किया गया। जसमें विद्यार्थियों को पेन–बिन बनाने का प्रशिक्षण दिया गया तथा प्लास्टिक पेन के दुष्प्रभावों के बारे में बताया गया।
- इस कार्यशाला में प्लास्टिक पेन पर जागरूकता व्याख्यान सभी विद्यार्थियों को दिया गया तथा उन्हें प्रेरित किया गया कि वे उपयोग किए गए प्लास्टिक पेन को कहीं भी न फेंके तथा पेन–बिन की अवधारणा से उन्हें परिचित कराया गया, ताकि वे सभी उपयोग किए गए पेन को एकत्र कर सकें तथा उन्हें ऐसी जगह पर स्थानांतरित कर सकें, जहां उनका पुनर्चक्रण किया जा सके।
- पेन–बिन बनाने के लिए पर्यावरण अनुकूल सामग्री का उपयोग किया गया है।
- विद्यार्थियों ने आस–पास की दुकानों से विभिन्न आकार के कार्टन बक्से एकत्र किए हैं।
- कार्टन बॉक्स और चार्ट पेपर तथा पारदर्शी शीट की मदद से पेन बिन बनाया गया है, बॉक्स पर एक छेद है जिसके अंदर इस्तेमाल किया हुआ पेन डाला जा सकता है।

- पेन बिन के भर जाने के उपरांत नगर पालिका के ठोस अपशिष्ट केन्द्र में जमा कर दिया जाता है ताकि समस्त प्लास्टिक पेन एक जगह रिसायकल हो सके।
- प्लास्टिक पेन के उपयोग तथा उपयोग के बाद ये कहा जाता है कि इसे जानने के लिए गूगल फॉर्म द्वारा एक सर्वेक्षण किया गया। यह सर्वेक्षण मुख्य रूप से उन लोगों पर किया गया है जो नियमित रूप से पेन का उपयोग करते हैं जैसे छात्र, शिक्षक, डॉक्टर, कार्यालय कर्मचारी आदि।

परिणाम एवं प्रभाव

- गूगल फॉर्म सर्वे के अनुसार 55.4% लोग बॉल प्वाइंट पेन का उपयोग करते हैं जो प्लास्टिक से बना होता है।
- 45.5% लोग प्लास्टिक से बने यूज एण्ड थ्रो पेन का प्रयोग करते हैं।
- 43.2% लोग एक महीने में 3 से अधिक पेन खरीदते हैं।
- 40.9% लोग 5 से 10 रुपए का पेन खरीदते हैं।
- 56.8% लोग इस्तेमाल किये गये पेन को कूड़ेदान में फेंक देते हैं।
- 90.9% लोग प्लास्टिक बॉडी पेन का उपयोग करते हैं और केवल 9.1% लोग ही मेटल बॉडी पेन का उपयोग करते हैं।
- वर्तमान में कॉलेज में पेन–बिन है, जहां छात्र और शिक्षक दोनों को इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक पेन डालने का निर्देश दिया गया, ताकि इसे रिसायकल के लिए भेजा जा सके और कॉलेज परिसर को प्लास्टिक कचरा मुक्त बनाया जा सके।
- उपयोग करो और फेंको की प्रथा को समाप्त करने का प्रयास विस्तृत रूप से किया जा रहा है।

बेस्ट प्रेक्टिस का प्रसार :–

कैंपस घोषणा, पोस्टर, पावरप्वाइंट प्रस्तुति और सोशल मीडिया के माध्यम से बेस्ट प्रैक्टिस के उद्देश्य और गतिविधियों को वालिन्टियरों के माध्यम से प्रसारित किया गया।

PEN BIN संग्रह बीन्स के रूप में अब क्षेत्र के मुख्य स्कूलों, कॉलेजों एवं विभिन्न कार्यालयों जैसे – थाना, तहसील कार्यालय, नगर पालिका

कार्यालय आदि में उपलब्ध है, जो योगदानकर्ता को सुविधाजनक ड्रप प्वाइंट की सुविधा प्रदान करते है। अपशिष्ट न्यूनिकरण प्रयासो में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों के लिए पुरस्कार कार्यक्रम लागू करने पर विचार है।

"Educate and Engage the Campus Community"
परिसर समुदाय को शिक्षित और संलग्न करें

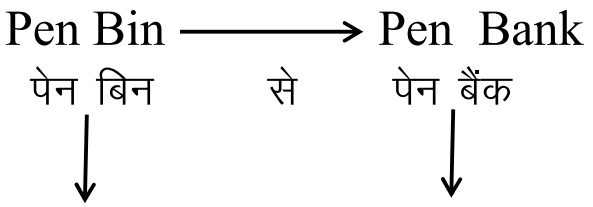

Deposite Old Pen — पुराना पेन जमा करें

Get New One — नया पेन प्राप्त करें

बेस्ट प्रैक्टिस हेतु वालटियर का चयन

महाविद्यालय के छात्राओं की पर्यावरणीय जगरूकता और कार्यवाही के प्रति जूनून पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, महाविद्यालय में घोषणा के माध्यम से भागीदारी को प्रोत्साहित करके महाविद्यालय की पेन बिन बेस्ट प्रैक्टिस गतिविधि के वालंटियर का चयन किया गया। चयन के उपरांत वालंटियरों की उन्मुखीकरण के साथ प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही विभिन्न भूमिकाएँ सौंपी गयी, कार्य की प्रगति के लिए नियमित बैठक ली जाती है, तथा वालंटियर के योगदान को विभिन्न माध्यमों से सरहना की जाती है।

क्रियान्वयन के दौरान आने वाली चुनौतियाँ

बहुत सारी रिपोर्टें और लेख मिले जिनमें बताया गया कि पेन जलवायु को कैसे प्रभावित करते हैं। पेन कई प्रकार के होते हैं और हर प्रकार के अपने अच्छे और बुरे पक्ष होते हैं। सबसे बड़ी चुनौती **डिस्पोजेबल पेन (इस्तेमाल करो और फेंक दो)** है, जो हमें शैक्षिक संस्थानों, कार्यालयों,

होटलों, सम्मेलनों में मिलते हैं या सस्ते होने के कारण खरीद लेते हैं। प्लास्टिक पेन – मन का दोस्त लेकिन पर्यावरण का दुश्मन हैं।

हर चीज का एक उपयोगी जीवन होता है और कलम का भी। दुर्भाग्य से, आज अधिकांश पेन और रिफिल बंद होने तक काम करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। अपने जीवन के अंत में, वे गायब नहीं होते वे लैंडफिल में चले जाते हैं क्योंकि अधिकांश पेन पुनर्चक्रण योग्य नहीं होते हैं और कई प्रकार के प्लास्टिक और धातु से बने होते हैं। प्रदूषण लाभ के लिए।

क्रियान्वयन के दौरान लोगों को लगातार जागरूक करते रहना पड़ा। अलग–अगल अभियानों के माध्यमों से सबको इसके दूषप्रभावों के बारे में सचेत करते रहना पड़ा। अलग–अलग जगहों पे पेन बिन को रखने के बाद समय–समय पर निगरानी करते रहना है, ताकि पेन बिन के महत्व को ज्यादा से ज्यादा प्रसार किया जा सकें।

पेन बिन का उपयोग (प्रमुख सीख)

- पुनः प्रयोज्य धातु पेन का चयन करें।
- फाउंटेन पेन छात्रों और वयस्कों के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प हो सकता है।
- रिफिल पेन का अधिक उपयोग, यूज एंड थ्रो पेन का कम प्रयोग।
- पेन **बायोप्लास्टिक** से बनाए जा सकते हैं।
- पर्यावरण अनुकूल कागज से बने पेन का उपयोग किया जा सकता है।
- पुनर्नवीनीकृत प्लास्टिक पेन बनाया जा सकता है।
- प्लास्टिक पेन के कुप्रबंधन के प्रभाव के बारे में लोगों की समझ बढ़ाना तथा उपयोग के बाद प्लास्टिक पेन का उचित प्रबंधन कैसे किया जाए, इस बारे में लोगों को जागरूक करना।
- प्लास्टिक प्रदूषण को न्यूनतम करने के लिए पेन–बिन को हर जगह रखा जाना चाहिए जहां इसका अधिकतम उपयोग हो।
- Eco-friendly paper pen (100% Plastic free) का उपयोग छात्राओं तथा अध्यापकों द्वारा ज्यादा से ज्यादा किया जायें।

- सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि में Environment Friendly Pure Bamboo Pen का विकल्प चूना जा सकता है।

एकत्रित किए गए कलम कहा भेजे जायेंगे

विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, शासकीय कार्यालयों में पेन बिन के माध्यम से इक्ट्ठे किए गए प्लास्टिक पेन नगर निगम/नगर पालिका के ठोस अपशिष्ट प्रंबंधन केन्द्र द्वारा ले लिया जायेगा, तथा सारे प्लास्टिक पेनों को प्लास्टिक के साथ रिसायकल होने के लिए भेज दिये जायेंगे। जोकि रिसायकल होने के बाद प्लास्टिक के रूप में दोबारा उपयोग में लाया जा सकता है।

वृहद क्रियान्वयन

- छत्तीसगढ़ में लगभग 50000 स्कूल, 1000 कॉलेज और 08 विश्वविद्यालय हैं। उच्च स्तरीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी शैक्षणिक संस्थानों में पेन–बिन की अवधारणा को पर्यावरण अध्ययन विषय के अंतरगत इसे अनिवार्य परियोजना किया जाना चाहिए। इसके साथ ही हर शिक्षण संस्थान में प्लास्टिक पेन के कम उपयोग पर जोर दिया जाना चाहिए, ताकि वृहद स्तर पर इसका कार्यान्वयन सफल हो सके। यह व्यावहारिक अनुप्रयोग छात्रों, शिक्षकों और अधिकारियों को पर्यावरण के बारे में जागरूक करेगा और उन्हें यह समझने में मदद करेगा कि प्लास्टिक प्रदूषण से पर्यावरण को कैसे बचाया जाए।
- स्कूलों, कॉलेजों के इको क्लब को पेन–बिन अवधारणा को जमीनी स्तर पर लागू करने की जिम्मेदारी मिलनी चाहिए ताकि सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। भविष्य में इससे प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने में मदद मिलेगी।

- 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा, कॉलेज और यूनिवर्सिटी की वार्षिक अंतिम परीक्षा के दौरान शिक्षकों द्वारा लाखों उत्तर पुस्तिकाओं की जांच की जाती है, इस पेपर मूल्यांकन कार्य में हाल के समय में बड़ी मात्रा में **इस्तेमाल करो और फेंकों प्लास्टिक पेन** का उपयोग हो रहा है। इसलिए इसे संबोधित करने की आवश्यकता है और स्कूल और विश्वविद्यालय बोर्ड द्वारा रिफिल पेन के उपयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

अतिरिक्त सुझाव

यह बेस्ट प्रैक्टिस वर्ष 2023–2024–25 में राज्य के शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय, गोबरा नवापारा, रायपुर में शुरू हुआ है। यह अपने प्रारंभिक चरण में है यह महाविद्यालय परिसर के अंदर जागरूकता अभियान चल रहा है।

वर्तमान में **पेन बिन** को महाविद्यालय के आसपास के शासकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शासकीय कार्यालयों में जागरूकता अभियान के तहत पेन बिन के अवधारणा को वहाँ तक पहूँचाया गया तथा मॉडल के रूप में एक पेन बिन तैयार करके उनको प्रदान किया गया ताकि पेन बिन का व्यापक प्रचार प्रसार के साथ उसका उपयोग करते हुए जागरूक हो सके तथा अपने आसपास के लोगों को जागरूक कर सकें।

इस पेन–बिन अवधारणा को विभिन्न सरकारी कार्यालयों में शुरू किया जा सकता है जहाँ पेन का व्यापक उपयोग होता है जैसे मंत्रालय, संचालनालय आदि। इसके तहत विभिन्न कार्यालयों में उपयोग किये हुए पेन को एकत्रित कर एक जगह रीसायकल के लिए भेजा जा सकता हैं।